



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Tribune	27.5.21	2	7-8



HAU ADOPTS SIX VILLAGES

Hisar: Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University has adopted six villages in Hisar district, for which approved Corona medicine kits will be distributed. Vice-Chancellor Prof BR Kamboj handed over the medicine kit to Dr Ratna Bharti, Civil Surgeon, Hisar. He said the villages adopted in the first phase include Balsamand, Talwandi Rukka, Mangali, Agroha, Gawad and Mohabbatpur. He further said in six villages of the adopted district, kits of approved medicines have been handed over to the Civil Surgeon for the distribution through the PHC and social organisation. The Civil Surgeon appreciated the initiative of the university administration and said this type of cooperation would continue in future.



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैर भूम	२७.५.२४	९	२-६

वेबिनार

हकूमि व जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में धान की सीधी बिजाई विषय पर वेबिनार आयोजित

लगातार धान का रकबा
बढ़ने से प्रदेश में गिरा पानी
का स्तर, धान के लिए पानी
की ज्यादा जरूरत

जल संरक्षण में वरदान साबित होगी धान की सीधी बिजाई : प्रो. काम्बोज



वेबिनार के दीरान संबोधित करते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर डॉ. अर. काम्बोज एवं मौजूद अन्य।

फोटो: हरिभूमि

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर डॉ. अर. काम्बोज ने कहा कि वैश्विक स्तर पर जल की समस्या गंभीर होती जा रही है। भारत में प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता में 1950 और 2005 के बीच 68 प्रतिशत की कमी आई है और 2050 तक यह 77 प्रतिशत तक घटने की संभावना है। देश में चावल सबसे महत्वपूर्ण फसल है और आधी से अधिक आबादी के लिए एक मुख्य भोजन है। हरियाणा केंद्रीय पूल में खाद्यान्न का एक प्रमुख योगदानकर्ता है। बासमती चावल का 60 प्रतिशत से अधिक नियांत हो रहा है। वे विवि में ऑनलाइन माध्यम से धान की सीधी बिजाई-अवसर, समस्या व समाधान विषय को लेकर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार को बतार मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे।

यान की सीधी बिजाई से पानी की बचत: हरियाणा व उत्तर-पश्चिम भारत के अधिकांश हिस्सों में चावल की परम्परागत तरीके से खेती की जा रही है, जिसने जल व श्रम की बहुत अधिक आवश्यकता होती है। इसलिए धान की सीधी बिजाई पानी की बचत और कम खर्च से चावल के उत्पादन में बढ़ोत्तरी करती है। साथ ही यह जल संरक्षण और टिकाऊ खेती की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा।

इन्होंने भी धान की सीधी बिजाई को लेकर एक अपने विचार

इस वेबिनार में विश्वविद्यालय के अवृत्तिकाल विदेशीक डॉ. एस. के. सहरावत ने सभी का स्वागत किया। खरपतवार अनुसंधान निदेशक डॉ. जे. एस. मिश्रा, डॉ. राजवीर द्वापरसह, डॉ. एस. के. सिंह ने भी वेबिनार में अपने विचार रखे। पैकल डिस्कशन में डॉ. सरबीर सिंह पूर्णिया, डॉ. धर्मेश रायद्व, राजबांध वर्गी व डॉ. जसवीर सिंह शामिल हुए। सभ्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस. के. ठकराल ने सभी का धन्यवाद किया। वेबिनार के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने प्रदेश सरकार द्वारा द्वारा जारी जल संरक्षण के लिए विभिन्न योजनाओं की प्रस्तुत जानकारी दी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने प्रदेश सरकार द्वारा द्वारा जारी जल संरक्षण के लिए विभिन्न योजनाओं की प्रस्तुत जानकारी दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

सम्माचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पौन २० मार्च २१	२७-३-२१	२	१-५

पारंपरिक विधि की तुलना में धान की सीधी बिजाई से 20% से अधिक बचा सकते हैं पानी

हकूमि व जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में धान की सीधी बिजाई विषय पर वेबिनार का आयोजन

भारकर न्यूज़ | हिसार

वैश्विक स्तर पर जल की समस्या गंभीर होती जा रही है। भारत में प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता में 1950 और 2005 के बीच 68 प्रतिशत की कमी आई है और 2050 तक यह 77 प्रतिशत तक घटने की संभावना है। देश में चावल सबसे महत्वपूर्ण फसल है और आधी से अधिक आबादी के लिए एक मुख्य भोजन है।

हरियाणा कैंट्रीय पूल में खाद्यान्न का एक प्रमुख योगदानकर्ता है। राज्य में बासमती चावल का 60 प्रतिशत से अधिक निर्यात हो रहा है। हरियाणा में फसल विविधिकरण को बढ़ावा देने के लिए सरकार के प्रयासों के बावजूद, किसान राज्य में धान-गोहू चक्र में फंस गए हैं। धान के लिए पानी की सबसे अधिक जरूरत होती है, वहीं प्रदेश में गिरते भूजल स्तर के लिए जिम्मेदार है और लगातार प्रदेश में धान की खेती का रकबा भी बढ़ रहा है। यह पारंपरिक विधि से की जाने वाली चावल की खेती



की तुलना में 20 प्रतिशत तक पानी बचाने में मददगार साबित होगा। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर डॉ. आर. काम्बोज ने कहे। वे विवि में ऑनलाइन माध्यम से धान की सीधी बिजाई-अवसर, समस्या और समाधान विषय को लेकर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। वेबिनार का आयोजन एचएयू व खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि हरियाणा और उत्तर-पश्चिम भारत के अधिकांश हिस्सों में चावल की

परम्परागत तरीके से खेती की जा रही है, जिसमें जल व श्रम की बहुत अधिक आवश्यकता होती है। इसलिए धान की सीधी बिजाई पानी की बचत और कम खर्च से चावल के उत्पादन में बढ़ोतारी करती है। यह जल संरक्षण और टिकाऊ खेती की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा। धान की सीधी बिजाई से श्रम की बचत के साथ-साथ ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन को भी कम करता है। प्रतिरोधित फसल की तुलना में सीधी बिजाई से फसल में कोटों और रोगों (जैसे फुट रोट और बकाने, शीथ ब्लाइट) के संक्रमण की संभावना कम होती है।

इन्होंने भी सीधी बिजाई को लेकर रखे अपने विचार

इस वेबिनार में विवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने सभी का स्वागत किया। खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के निदेशक डॉ. जे.एस. मिश्र, डॉ. राजवीर सिंह, डॉ. एस.के. सिंह ने भी विचार रखे। पैनल डिस्कशन में डॉ. सत्यवीर सिंह पुनिया, डॉ. धर्मबीर यादव, राजबीर गंग व डॉ. जसवीर सिंह शामिल हुए। सम्यक विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. ठकराल ने सभी का धन्यवाद किया। वेबिनार के आयोजन संयोजक डॉ. टोडरमल व डॉ. अंकुर चौधरी जबकि सह संयोजक डॉ. बी.एस. हुडा और डॉ. संदीप रावल थे। वेबिनार में विश्वविद्यालय के अलावा विभिन्न संस्थानों से वैज्ञानिक, विद्यार्थी और देशभर से किसान शामिल हुए। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना के सम्यक विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एम.एस. भुल्लर मुख्य वक्ता थे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अभिभावना	२७.५.२१	२	७.८

जल संरक्षण में वरदान साबित होगी धान की सीधी बिजाई

माइ सिटी रिपोर्टर

हकूमि व जबलपुर के संयुक्त
तत्वावधान में हुआ वेबिनार

हिसार। भारत में प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता में 1950 और 2005 के बीच 68 प्रतिशत की कमी आई है। 2050 तक यह 77 प्रतिशत तक घटने की आशंका है। धान के लिए पानी की सबसे अधिक जरूरत होती है। धान की सीधी बिजाई पारंपरिक विधि से की जाने वाली चावल की खेती की तुलना में 20 प्रतिशत तक पानी बचाने में मददगार साबित होगा। यह विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से धान की सीधी बिजाई-अवसर, समस्या और समाधान विषय को लेकर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार में बाहर मुख्यातिथि बोल रहे थे।

वेबिनार का आयोजन चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि धान की

सीधी बिजाई पानी की बचत और कम खर्च से चावल के उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। साथ ही यह जल संरक्षण और टिकाऊ खेती की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा। धान की सीधी बिजाई से त्रिम की बचत के साथ-साथ ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन को भी कम करता है। प्रतिरोपित फसल की तुलना में सीधी बिजाई से फसल में कीटों और रोगों (जैसे फुट रोट और बकाने, शीथ ब्लाइट) के संक्रमण की संभावना कम होती है। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियान के सम्य विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एमएस भुल्लर मुख्य वक्ता थे। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने मेरा पानी मेरी विरासत योजना का अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए किसानों का आहवान किया। हकूमि के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने सभी का स्वागत किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पैन क जागरण	27.5.21	३	२५

धान की सीधी बिजाई से होगी जल की बचत

जागरण संवाददाता, हिसार : वैश्वक स्तर पर जल की समस्या गंभीर होती जा रही है। भारत में प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता में 1950 और 2005 के बीच 68 फीसद की कमी आई है और 2050 तक यह 77 फीसद तक घटने की संभावना है।

कुलपति प्रौ. बीआर कंबोज बताते हैं कि देश में चावल सबसे महत्वपूर्ण फसल है और आधी से अधिक आबादी के लिए एक मुख्य भोजन है। हरियाणा केन्द्रीय पूल में खाद्यान्न का एक प्रमुख योगदानकर्ता है। राज्य से बासमती चावल का 60 फीसद से अधिक नियांत हो रहा है। हरियाणा में फसल विविधीकरण की बढ़ावा देने के लिए सरकार के प्रयासों के बावजूद, किसान राज्य में धान-गेहूं चक्र में फंस गए हैं। धान के लिए पानी की सबसे अधिक जरूरत होती है, वहीं प्रदेश में गिरते भूजल स्तर के लिए जिम्मेदार है और लगातार

धान की सीधी बिजाई कैसे होगी फायदेमंद हरियाणा और उत्तर-पश्चिम भारत के अधिकांश हिस्सों में चावल की परंपरागत तरीके से खेती की जा रही है। जिसमें जल व श्रम की बहुत अधिक आवश्यकता होती है। इसलिए धान की सीधी बिजाई पानी की बचत और कम खर्च से चावल के उत्पादन में बढ़ोतारी करती है। साथ ही यह जल संरक्षण और टिकाऊ खेती की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा। धान की सीधी बिजाई से श्रम की बचत के साथ-साथ ग्रीन हाउस गैस उत्पर्जन को भी कम करता है।

प्रदेश में धान की खेती का रक्कड़ा भी बढ़ रहा है। यह पारंपरिक विधि से की जाने वाली चावल की खेती की तुलना में 20 फीसद तक पानी बचाने में मददगार साबित होगा। कुलपति

मेरा-पानी, मेरी विसरत की दी जानकारी पंजाब कृषि विश्वविद्यालय तुंगियान के सर्व विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डा. एमएस भूल्लर मुख्य वक्ता थे। उन्होंने धान की सीधी बिजाई में खरपतवारों की रोकथाम, बिजाई का समय, लेजर लेवलर से जमीन की तैयारी, बीज की मात्रा व बीज का शोब, भारी व मस्तम जमीनों में सीधी बिजाई की सावधानियां, कम समय में पकने वाली किसी के प्रयोग की जानकारी दी।

इन्होंने भी धान की सीधी बिजाई को लेकर रखे अपने विचार डा. एसके सहरावत ने सभी का स्वागत किया। खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के निदेशक डा. जेएस मिश्रा, डा. राजबीर सिंह, डा. एसके सिंह ने भी वेबिनार में अपने विचार रखे। पैनल डिरक्षन में डा. सतबीर सिंह पूर्णिया, डा. धर्मबीर यादव, राजबीर मर्ग व डा. जयसीर सिंह शामिल हुए। सरय विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डा. एस.के. टकराल ने सभी का धन्यवाद किया। वेबिनार के आयोजन संयोजक डा. टोडरमल व डा. अकुर चौधरी जबकि सह संयोजक डा. वीएस हुड्डा और डा. सदीप रावत थे।

विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से धान की सीधी बिजाई-अवसर, समस्या और समाधान विषय को लेकर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित

कर रहे थे। वेबिनार का आयोजन चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर की तरफ से किया गया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
२५.३.२०२१	२७.३.२१	५	३-४

मैसी विवि और एचएयू की ऑनलाइन मीटिंग

शोध कार्य में सहयोग करेंगे दोनों विश्वविद्यालय

हिसार, 26 मई (निस)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (सीसीएसएचएयू) और मैसी विश्वविद्यालय, न्यूजीलैंड संयुक्त रूप से कृषि अनुसंधान और शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करेंगे। दोनों विश्वविद्यालयों के अधिकारियों की एक ऑनलाइन बैठक आयोजित की गई। इस बैठक की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने की।

इस अवसर पर कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि दोनों विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिक संयुक्त रूप से शोध कार्य

में एक-दूसरे का सहयोग करेंगे। दोनों विश्वविद्यालय संयुक्त डिग्री और डिप्लोमा कोर्सों को बढ़ावा देंगे। बैठक के दौरान विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने प्रोजेक्ट के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी और बताया कि दोनों विश्वविद्यालयों में इस बारे में पहले ही एमओयू साइन हो चुका है। स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. अनुल ढींगड़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय के बीज विज्ञान एवं तकनीकी विभाग में स्पार्क के तहत मैसी विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में एक प्रोजेक्ट चल रहा है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उत्तर समाचार	२७.५.२१	—	—

हकृति व जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में धन की सीधी बिजाई विषय पर राष्ट्रीय वैविनार का आयोजन जल संरक्षण में वरदान साबित होगी धन की सीधी बिजाई : प्रो. काम्बोज

हिसार, 26 मई (देवानंद) : वैश्विक स्तर पर जल की समस्या गंभीर होती जा रही है। भारत में प्रति व्यक्ति पानी की उत्तरव्यवस्था में 1950 और 2005 के बीच 68 प्रतिशत की कमी आई है और 2050 तक यह 77 प्रतिशत तक घटने की संभावना है। देश में चावल सब्जे में महत्वपूर्ण फसल है और आधी से अधिक आवादी के लिए एक मुख्य भोजन है। हरियाणा केंद्रीय पूल में खाड़ान का एक प्रमुख योगदानकर्ता है। राज्य से बासमती चावल का 60 प्रतिशत से अधिक निर्यात हो रहा है। हरियाणा में फसल विधीकरण को बढ़ावा देने के लिए सरकार के प्रयासों के बावजूद, किसान राज्य में धन-गेहूं चक्र में फंस गए हैं। धन के लिए पानी की सबसे अधिक जरूरत होती है, वहीं प्रदेश में गिरते भूजल स्तर के लिए जिम्मेदार है और लगातार प्रदेश में धन की खेती का रुक्षा भी बह रहा है। यह परांपरिक

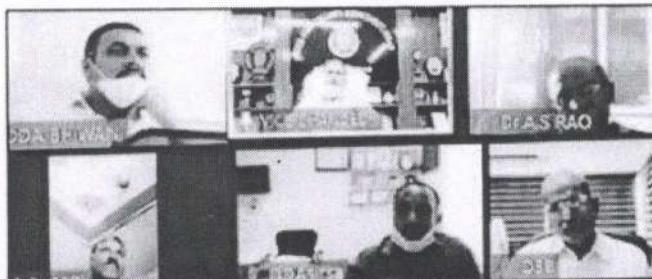
विधि से की जाने वाली चावल की खेती की तुलना में 20 प्रतिशत तक पानी बचाने में मददगार साबित होगा।

ये विचार चौधरी चरण सिंह

का आयोजन चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्विसार व खरपतवार व्यापार में खरपतवारों की गोकथाम, अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के

संयुक्त तत्वावधान में किया गया।

विभागाध्यक्ष डॉ. एम.एस. भुल्लर मुख्य वक्ता थे। उन्होंने धन की सीधी बिजाई में खरपतवारों की गोकथाम, बिजाई का समय, लेजर लेवलर से जमीन की तैयारी, बीज की मात्रा व बीज का शोध, भारी व फल्यम जमीनों में सीधी बिजाई की सावधानियां, कम समय में पकने वाली किस्मों के प्रयोग की जानकारी दी। पैनल डिस्कशन में डॉ. सतवीर सिंह पूनिया, डॉ. धर्मवीर यादव, राजवीर गर्ग व डॉ. जसवीर सिंह शामिल हुए। सभ्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एस.के. उकराल ने सभी का धन्यवाद किया। वेबिनार के अध्योजन संयोजक डॉ. टोडरमल व डॉ. अंकुर चौधरी जबकि सह संयोजक डॉ. वी.एस. हुड्डा और डॉ. संदीप रावल थे। वेबिनार में विश्वविद्यालय के अलावा विभिन्न संस्थानों से वैज्ञानिक, विद्यार्थी और देशभर से किसान शामिल हुए।



हिसार : वेबिनार के दौरान संवेदित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर वी.आर. काम्बोज एवं मौजूद अन्य। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर वी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से धन की सीधी बिजाई-अवधार, समस्या और समाधान विषय को लेकर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार को बताएँ। वेबिनार मुख्याधिकारी संवेदित कर रहे थे। वेबिनार

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के सभ्य विज्ञान विभाग के



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जागभाइ	26.05.21	—	—

जल संरक्षण में वरदान साबित होगी धान की सीधी बिजाई : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

हिसार : वैश्वक स्तर पर जल की समस्या गंभीर होती जा रही है। भारत में प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता में 1950 और 2005 के

से बासमती चावल का 60 प्रतिशत से अधिक नियांत हो रहा है। हरियाणा में फसल विविधकरण को बढ़ावा देने के लिए सरकार के

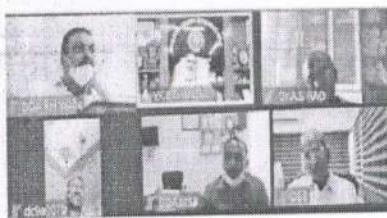
प्रयासों के बावजूद, किसान राज्य में धान-गेहूं चक्र में फंस गए हैं। धान के लिए पानी की सबसे अधिक जरूरत होती है, वहीं प्रदेश में

हरकृषि व जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में धान की सीधी बिजाई वेबिनार का आयोजन

कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे।

वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से धान की सीधी बिजाई-अवसर, समस्या और समाधान विषय को लेकर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। वेबिनार का आयोजन चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि हरियाणा

और उत्तर-पश्चिम भारत के अधिकांश हिस्सों में चावल की परम्परागत तरीके से खेती की जा रही है, जिसमें जल व श्रम की बहुत अधिक आवश्यकता होती है। इसलिए धान की सीधी बिजाई पानी की बचत और कम खर्च से चावल के उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। साथ ही यह जल संरक्षण और टिकाऊ खेती की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा। धान की सीधी बिजाई से श्रम की बचत के साथ-साथ ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन को भी कम करता है। प्रतिरोधित फसल की तुलना में सीधी बिजाई से फसल में कीटों और रोगों (जैसे फूट रोट और बकाने, शीथ ब्लाइट) के संक्रमण की संभावना कम होती है।



बीच 68 प्रतिशत की कमी आई है और 2050 तक यह 77 प्रतिशत तक घटने की संभावना है। देश में चावल सबसे महत्वपूर्ण फसल है और आधी से अधिक आबादी के लिए एक मुख्य भोजन है। हरियाणा केंद्रीय पूल में खाद्यान्न का एक प्रमुख योगदानकर्ता है। राज्य

गिरते भूजल स्तर के लिए जिम्मेदार है और लगातार प्रदेश में धान की खेती का रक्कड़ा भी बढ़ रहा है। यह पारंपरिक विधि से की जाने वाली चावल की खेती की तुलना में 20 प्रतिशत तक पानी बचाने में मददगार साबित होगा। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	26.05.21	—	—

समस्त हरियाणा

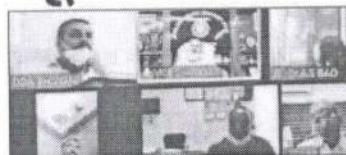
बुधवार, 26 मई, 2021

देश की सबसे महत्वपूर्ण फसल है चावल : प्रो. कांबोज

समस्त हरियाणा न्यूज़

हिसार। वैश्विक स्तर पर जल की समस्या गंभीर होती जा रही है। भारत में प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता में 1950 और 2005 के बीच 68 प्रतिशत को कमी आई है और 2050 तक यह 77 प्रतिशत तक घटने की संभावना है। देश में चावल सबसे महत्वपूर्ण फसल है और आधी से अधिक आबादी के लिए एक मुख्य भोजन है। हरियाणा केंद्रीय पूल में खाद्यान्न का एक प्रमुख योगदानकर्ता है। राज्य से बासमती चावल का 60 प्रतिशत से अधिक निर्यात हो रहा है। हरियाणा में फसल विविधीकरण को बढ़ावा देने के लिए सरकार के प्रयासों के बावजूद, किसान राज्य में धान-गेहूँ चक्र में फंस गए हैं।

धान के लिए पानी की सबसे अधिक जरूरत होती है, वहाँ प्रदेश में गिरते धूजल स्तर के लिए जिम्मेदार है और लगातार प्रदेश में धान की खेती का रक्षा भी बढ़ रहा है। यह पारंपरिक विधि से की जाने वाली चावल की खेती की तुलना में 20 प्रतिशत तक पानी बचाने में मददगार साबित होती है। इसलिए धान की सीधी विजाई पानी की



बचत और कम खर्च से चावल के उत्पादन में बढ़ोत्तरी करती है। साथ ही यह जल संरक्षण और टिकाऊ खेती की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा।

मेरा-पानी मेरी विरासत की दी जानकारी

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियान के सम्मिलित विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एम.एस. भुज्ज ने धान की सीधी विजाई-अवसर, समस्या और समाधान विषय को लेकर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार को बताई मुख्यतात्त्विक संबोधित कर रहे थे। वेबिनार का आयोजन चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। मुख्यतात्त्विक ने कहा कि हरियाणा और उत्तर-पश्चिम भारत के अधिकांश हिस्सों में चावल की परम्परागत तरीके से खेती की जा रही है, जिसमें जल व श्रम की बहुत अधिक आवश्यकता होती है। इसलिए धान की सीधी विजाई पानी की



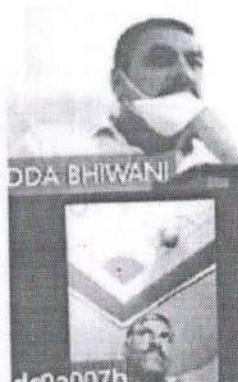
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समाचार पत्र	26.05.21	—	—

कार्यक्रम हक्किवि में धान की सीधी बिजाई विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

जल संरक्षण में वरदान साखित होगी धन की सीधी बिजाईः प्रो. बी.आर. काम्बोज

मिट्टी पर्यावरण न्यूज़, हिसार। लोकविकास सत्र पर जल की समस्या में शोधोरहोती जा रही है। भारत में प्रति वर्षीय बाढ़ों की उच्चतमता में 1950, और 2005 के बीच 68 प्रतिशत की कमी आई है और 2050 के बाद यह 77 प्रतिशत के तक घटने की संभावना है। देश में जलवायन सर्वेस महावृपणी कालान है और अधीयों से आशक आवादी के लिए एक मुख्य विज्ञान है। ये विज्ञान इतिहास की विश्वविद्यालय के कृष्णपति प्रो. वी. आर. गोप्यनाथ ने कहा है। वे विश्वविद्यालय में अवलोकन प्रश्नामय से ज्ञान की मीठी खिड़की— अवसर, समझना और समाजसेवा के लिए लोकप्रिय आवासिक गणराज्यीय विद्यालय की ओर मुद्रणालयित्र संस्थानों कर रहे हैं। प्रायोगितिक ने कहा है कि हारियाणा कीट्रोफ धूम में साधारण का एक प्रमुख योगदानकर्ता है। इसमें से वायापकी जागरूकता का 60 प्रतिशत से अधिक नियमों हो रहा है। इन्हीं विकास समिति के विभिन्न संस्करण के बाबत देखें।



प्रयासों के बावजूद, किसान राज्य
में धन-गैरि चक्र वै फूस मारा है।

पंजाब की कृषि विकास संस्थानों के समर्पण विभाग के विभाग अधिकारी डॉ. पम.एस. भुजल ने धान की सभी विवरण में खटकवारों का रोकथाम विवाह का समय, लैन-लेवल में जमीन की तैयारी

बीज की मात्रा व चीज का सौंध,
भारी व सम्पन्न जर्मीनों में सौंधी
विजाय की साधारणीया, कम समय
में पहुँच वाली। विजय के द्वारा योग की
जावकारी थी। इसपि एवं किसान
कल्याण विभाग के महानिदेशक
डॉ. हरदयपंथ मिहं ने प्रदेश सरकार
झारखण्ड का रोड बन सरकार

लिए विभिन्न योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी। साथ ही मेरा पांची मेरी विश्वासम योजना का अधिक से अधिक लाप उड़ावे के लिए कियाने का आद्यात्म किया।

इस विवरण से विश्वासयादालय के अनुसंधान विभाग डॉ. एस. के. सहारवत ने सभी का स्वागत किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाँच बजे	26.05.21	—	—

जल संरक्षण में वरदान साबित होगी धन की सीधी बिजाई : प्रो. काम्होज

पांच बाजे लघुगा



विवरणीयतात्मक हिंसा व खारपत्र अनुभवान् निदेशालय जलवायन के संस्थान तत्वावधान में चिया पाए। प्रायोगिकीय ने कहा है कि हाँचांग और उत्तर-पश्चिम भारत अधिकारीय विस्तार में बाजार के प्रमुख लोकों में खासी जा होती है, जिसमें चाचा य घम की व्यक्ति अवृत्ति आवश्यकताएँ होती हैं। इसलिये यानि चाचा में चिया विस्तार और कम खासी में चिया विस्तार के उत्तर-पश्चिम भारत में चक्रवाही करती है। याथ ही वह ज

संरक्षण और टिकाऊ छाती की दिशा में
महत्वपूर्ण काम होता। थान की सेवा के
में इसमें योग्यता के साथ-साथ उन्हें सब
विधि उपलब्ध होती है। योग्यता की
प्रतिक्रिया प्रकार की तुलना में सेवा की
से फ़क़र में कठीनी की जाती है। एक घटे दूर
और बचाने, रोकने वालों (एक) के संकेतण
प्रकार का काम होता है।

संरक्षण के लिए विभिन्न योग्यताओं की विस्तृत
आवश्यकता होती है। साथ ही दूसरी भौमि विद्यालय
योग्यता का अधिक से अधिक उपलब्ध कराते हैं
के लिए विभिन्नों का विवाहित विद्या।

विद्यालय के संविधानित विद्यालय के अनुसार
विभिन्न तरीकों से सहभागिता के सभी का
सम्बन्ध बनाया जाता है। उद्योग
विद्यालय विद्यालय के विद्यार्थी, उनके अपने

प्रेम-पानी मेंी विद्यारथ की दी जानकारी प्रेषण कृपि विश्वविद्यालय संचालन के समय विज्ञान विभाग के विभागाधारा और एसएमसी विभाग दो उत्तमविधि विधि को संसोधि विज्ञान में खुशखबरी की चेकआउट, विज्ञान को साधा। ट्रान्सलेक्शन से जर्मनी का बोहेम, बोही का नाम व बोही का अस्थि, भारी व भ्रमण जर्मनी में संसोधि विज्ञान की साधारणता, कम समय में पकड़ने वाली विज्ञान के प्रयोगों को जानकारी दी। यह एक विस्तर कल्पना विभाग के महानिदेशक डॉ. हरदीप मिहं ने प्रदूष सम्बन्ध द्वाग्र चलाई जा रही जल प्रदूषण से जुड़ी विज्ञान में इसके सिंह ने भी विवरण देया थे। पैकेट इंजिनियरिंग में हाँ। स्ट्रोबार, लिंग पुरुषों, डॉ. प्रभानन्द पुराण, राजकुमार व वडा विज्ञान विभाग हाँ। सामने विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एसएक्स विज्ञान विभाग ने जली का व्यवस्थापन विभाग के अध्यक्ष डॉ. ट्रान्सलेक्शन व डॉ. अंतुर्क चौधरी जारी कर्म संचालक डॉ. एसएमसी विभाग विज्ञान विभाग संचालक डॉ. विज्ञान विभाग के महानिदेशक डॉ. हरदीप मिहं ने प्रदूष सम्बन्ध द्वाग्र चलाई जा रही जल



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

सम्बन्धान पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
२१५८२२	२७.५.२१	५	१५

भारकर खास • इस विधि से जड़ों में सूत्र कर्मी रूपी कीटाणुओं के अंडे अधिक तापमान से मर जाते हैं। **किसान जून-जुलाई में फसल की जड़ों को सूत्र कर्मी रोग से बचाने के लिए अपनाएं भूमि सौर तपीकरण विधि:** डॉ. अरोड़ा

प्राकृतिक विधि द्वारा इस रोग की रोकथाम 80 से 90% की जा सकती है।

राकेश कुमार | गढ़ी दीरबल

हरियाणा में सब्जियों का खुले खेतों में या मच्छरदानी, पॉली हाउस एवं प्लास्टिक की सुरंग में भूमि का सूर्य की तेज किरणों से उपचार करना जून और जुलाई के महीने में बहुत आवश्यक है।

ऐसे में किसान ध्यान रखें कि वह जून और जुलाई के महीनों के इन 60 दिनों में भूमि में विशेषकर सब्जियों की संरक्षित खेती करने वाले किसानों को भूमि का सौर तपीकरण करना (सौरल सोलर स्टरलाइजेशन) इस बिंदु क्या है।

विधि के अपनाने से जड़ों में सूत्र कर्मी रूपी कीटाणुओं के अंडे अधिक तापमान पर मर जाते हैं और किसी भी प्रकार की महंगे रसायन का प्रयोग ना करके प्राकृतिक विधि द्वारा इस रोग की रोकथाम 80 से 90 प्रतिशत की जा सकती है।

इन दो महीनों के दौरान किसानों को इस विधि को अपनाना बेहद जरूरी है जो की भूमि को रोग रोकत करने में कारगर सिद्ध हुई है। इसको अपनाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर ध्यान देना बेहद आवश्यक है जिनके बारे में पूर्व प्रोफेसर सुरेश कुमार अरोड़ा पूर्व अध्यक्ष सब्जी विज्ञान विभाग हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार ने बताया कि यह महत्वपूर्ण बिंदु क्या हैं।

महत्वपूर्ण बिंदु • भूमि को पारदर्शी पॉलीथिन के साथ ढंके

- जनवरी से मई की फसल के अवशेषों को प्लास्टिक के संयंत्र या मच्छरदानी से हटा कर भूमि को साफ सुधारा कर दें।
- पिछली फसल के लिए बनाए गए खेती एवं बैडों को पलटू हल या चिजलर या सिंगल ब्लेड हल जिसे हम तोता हल या सुआ के प्रयोग से खेत की गहरी जुलाई करना आवश्यक है। तीन से चार गहरी जुलाई दोनों दिशाओं में करने से अधिक लाभ होता है।
- भूमि को सुहागा लगाकर समतल बनाने के बाद उसके ऊपर डिप लाइन सिंचाई के लिए 2 से 3 मीटर की आपसी दूरी पर बिछा दें।
- मच्छरदानी/ पॉली हाउस/ प्लास्टिक की सुरंग से अधिक लाभ होता है।
- प्लास्टिक के संयंत्र को पूरी तरह से चारों दिशाओं में प्लास्टिक की पत्री के साथ 60 दिन के लिए ढंक देना चाहिए। ताकि हवा अंदर क्रॉस ना हो सके। जिससे कि अंदर का तापमान बढ़कर 60 से 70 डिग्री सेल्सियस हो जाए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
मौसम जागरण	२७.५.२१	३	१-५

मुख्य

इ मौसम सेवा के तहत प्रदेश के साढ़े तीन लाख किसानों को एनआईसी के रहयोग से प्रेरित की जाती है मौसम की सलाह

खेती का नुकसान घटाया, लोगों के डे-प्लान को दी दिशा

जगप्रण संवाददाता, हिसार : कहते हैं कि खेती सबसे जाऊंचिम का काम है, जरा सा मौसम कम या ज्यादा हुआ तो भारी नुकसान कर देता है। इसी नुकसान को कम करने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 11 वर्ष पहले हृ-मौसम की शुरुआत हुई थी। खास बात है कि यह सेवा अब लोगों का डे-प्लान भी सेट कर रही है, उन्हें किचन गाईन की जानकारी दे रही है, घर को हरित बनाने के टिप्प दे रही है। इस सेवा की सहायता से मौसम और पौधों की जानकारी हासिल कर लोग अपने फैसले लेते हैं। मौसम लोगों के जीवन का हिस्सा बनता जा रहा है। हृ-मौसम में एसएमएस सेवा व मोबाइल एप दोनों सेवाएं शामिल हैं। हृ-मौसम हरियाणा की बैंकसाइट और मोबाइल एप पर जाकर कोई भी यह जानकारी ले सकता है।

प्रदेश के 6600 गांवों के साढ़े तीन लाख लोग जुड़े
कृषि मौसम विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डा. मदन खिंचड़ बताते हैं कि अब राज्य के 6600 गांवों में साढ़े तीन लाख से अधिक किसानों तक र रोज मौसम की जानकारी विश्वविद्यालय उपलब्ध करा रहा है। यह जानकारी एसएमएस के जरिए नेशनल इन्फोर्मेशन सेंटर के जरिए किसानों तक पहुंचाई जाती है। इस जानकारी की बढ़ावत कि किसान अपने रोजाना के कृषि कार्य मौसम अनुसार कर उत्पादन बढ़ाकर नुकसान को कम कर रहे हैं। इसी सेवा के लाभ को देखते हुए भारत सरकार भारत मौसम विभाग ने एम-किसान सेवा देश के सभी राज्यों के लिए शुरू की।

मौसम ही
नहीं खेती भी
रिखा रहा
ई-मौसम

किसान खेत को तैयार करने से लेकर फसल की बिजाई, सिंचाई, रोप, खाद का प्रयोग, कटाई, कढाई का काम भी इसी सेवा का लाभ लेकर कर रहे हैं। हृ-मौसम सेवा का

उद्देश्य है कि किसान मौसम आधारित कृषि पद्धति अपनाएं। हृ-मौसम पर सभी फसलों की जानकारी दी जाती है। मोबाइल एप के जरिए भी किसानों को जोड़ा गया है।

तीन दिन में अपडेट होती है जानकारी

किसानों को मौसम की समय-समय से जानकारी उपलब्ध कराने को लगातार संपर्क में रहना जरूरी है। ऐसे में तीन से चार दिन बाद लगातार मौसम अपडेट दी जाती है। मौसम में कोई बड़ा बदलाव होता है तो किसानों को तीन से चार दिन पहले ही सतर्क कर दिया जाता है। उन्हें यह भी बताया जाता है कि वह इस मौसम में अपनी खेती के रोजाना के कार्यों में क्या बदलाव करें। मोबाइल पर संदेश आते ही किसान उसी आधार पर काम शुरू कर देते हैं। जैसे बारिश आनी तो बिजाई, स्प्रिट्स और कढाई आदि रोक दिया जाता है।

एप से यह मिल रहा लाभ

2017 में मोबाइल एप हृ-मौसम एचएस का शुभारंभ किया था। एप पर 60 हजार से अधिक लोग जुड़े हैं। एप में मौसम पूर्वानुमान के साथ फसलों, सब्जियों व फलों की खेती की पूरी जानकारी भी उपलब्ध है। इसमें साप्ताहिक कृषि मौसम सलाह, विज्ञानियों व कृषि अधिकारियों के मोबाइल नंबर भी उपलब्ध हैं। साथ ही फैसलुक पेज हृ-मौसम एचएस व गाटसेप पर भी सेवाएं दी जा रही हैं।

